श्रीगोरखनाथ मन्दिर में श्रीराम कथा

प्रकाशनार्थ

गोरखपुर, 24 सितम्बर। श्री गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर में युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त श्री दिग्विजयनाथ जी महाराज की 49वीं एवं राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की चतुर्थ पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत आज कथा के तीसरे दिन कथाव्यास काशी से पधारे **जगदगुरू अनन्तानन्द द्वाराचार्य स्वामी डॉ0 रामकमल दास वेदान्ती जी महाराज** जी द्वारा **'श्रीराम कथा'** दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार में श्रीराम कथा की अमृतवर्षा प्रारम्भ हो गई। कथाव्यास कथाव्यास ने महाराजा दशरथ के नाम की महिमा के साथ कथा को विस्तार दिया। उन्होंने कहा कि दशरथ का अर्थ है जो अपने दशो इन्द्रिओं रूपी घोड़ो की लगाम को अपने वश में किया हो और दशानन का अर्थ है। जिसकी दशों इन्द्रिया भोग के लिए खुली हों। दशरथ के यहां भगवान अवतार लेते हैं और दशानन के यहां काम का प्रतिक मेद्यनाथ पैदा होता है। उन्होनें अयोध्या की महिमा का उल्लेख करते हुए कहा कि अयोध्या को मनु महाराज ने बसाया है। जिस प्रकार काशी भगवान शिव के त्रिशुल पर टिकी है उसी प्रकार अयोध्याधाम भगवान विष्णु के चक्र पर स्थापित है। अयोध्या का अर्थ ही है की जो दैहिक–दैविक अर्थात् काम–क्रोध–लोभ–मोह–ईर्ष्या आदि शत्रुओं द्वारा कभी जीता न जा सका हो। इसी अयोध्याधाम में महाराज दशरथ का धर्मपूर्वक शासन था। अयोध्या के इक्ष्वाकु वंशी सभी शासक धर्मात्मा थे, राष्ट्र भक्त थे और संस्कृति प्रेमी थे। अयोध्या नरेश राजा दशरथ को पुत्र न होने से दुःखी थे। वंश न चलने के तीन कारणों पर कथा केन्द्रित होते हुए वर्तमान युग के आचार–व्यवहार पर टिक जाती है। कथावाचक कहते है कि पितृदोष, ग्रहदोष एंव शारीरिक अक्षमता से वंश नही चलते। एक पुत्र यदि योग्य हो जाय तो 21 पीढ़ी का उद्धार करता है। शास्त्र कहते है पुत्र भक्त हो तो 21 पीढ़ी और दाता हो तो 7 पीढ़ी को तार देता है। यदि पुत्र शूरवीर हुआ और मातृभूमि की रक्षा करते हुए शहीद हुआ तो उसे सीधे मोक्ष की प्राप्ति होती है। वह सूर्य–चन्द्र का भेदन करता हुआ भगवद्धाम को जाता है। भारतमाता की सुरक्षा में भारत के वीर शहीद हो रहे सेनानियों के धर्म से बड़ा धर्म कोई नहीं। श्रीराम कथा में इसी पृष्ठभूमि के साथ कथा में श्रीराम के जन्म का प्रसंग प्रारम्भ होता है और कथाव्यास के साथ पूरा सभागार गा पड़ता है **'भए प्रकट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी.....'** आगे कथा को विस्तार देते हुए कथा व्यास ने भगवान श्रीराम की बाल लीलाओं का रसपान प्रारम्भ किया और भक्तिरस की ओजस्व धारा में भक्त गोते लगाते, डूबते–उतरते श्रीराम कथा का रसपान करते रहें। कथाव्यास ने कहा कि महाराजा दशरथ के घर चार पुत्रों का जन्म नही निराकार ब्रह्म का साक्षात् सगुण अवतार हुआ था किन्तु भगवान ने अपनी बाल लीलाओं के माया–जाल में समस्त अयोध्यावासियों को फॅसा रखा था। अयोध्या में आठो सिद्धियॉ, नव निधियों ने अपना डेरा डाल रखा था। भगवान् भाष्कर ने अपने सारथी अरूण को रथ रोक देने का आदेश देकर भगवान की बाल लीला का आनन्द लेने लगे और भगवान बाल रूप में पालना में झूलते हुए इस सबका आनन्द ले रहे है। महाराजा दशरथ के ऑगन में पालना में पड़े भगवान को झुला झुलाने के लिये अष्ट सिद्धियॉ और नवनिधियॉ भी जूझ रही है। बालरूप भगवान की भक्ति में देवता भी मगन थे। जिनका नाम सुनना ही शुभ है उनका साक्षात दर्शन का फल कौन प्राप्त

करना नही चाहेगा? इसी प्रसंग के साथ कथा भक्ति का रहस्य खोलने लगती है। कथाव्यास कहते है भगवान नारद ने नारदभक्ति सूत्रम् में भक्ति के दो मंत्र कथाश्रवण एवं संकीर्तन बताए हैं। भक्ति का यही सर्वाधिक आसान मार्ग है। भक्ति के इसी मार्ग पर भगवान श्रीराम के दर्शन को लालायित अयोध्या के लिये चल पड़ते है। भगवान शिव बूढ़े ब्राह्मण के वेश में और काकभुसुण्डि उनके शिष्य रूप धारण कर अयोध्या पहुॅचते है। इन्द्र, इन्द्राणि, आठो दिग्पाल सहित तीनों लोको के देवता भी अयोध्या में डेरा डाले हैं। कथा अयोध्या महिमा पर एकबार पुनः केन्द्रित हो जाती है। कथा व्यास सभी का आह्वान करते है कि आप आकर अयोध्या देखें।

श्रीराम कथा में रूप बदल भगवान शिव और काकभुसुण्डि के बाल रूप श्रीराम के दर्शन पर कथा केन्द्रित हो जाती है। भीड़ में जब शिव–काकभुसुण्डि जब दर्शन नहीं कर पाते तो भीड़ छटने की प्रतीक्षा में वे अयोध्या की पंचकोसी परिक्रमा पर चल पड़ते है। भगवान शिव–काकभुसुण्डि को बालरूप भगवान के दर्शन के लिये भॉति–भॉति के यत्न करने पड़े। भक्ति ऐसे ही यत्नों का परिणाय होती है। भक्ति सुविधा और भोग से नही तप और योग से प्राप्त होती है। भक्ति समर्पण का नाम है।

कथा करवट लेती है और शैव–वैष्णव सम्प्रदायों की एकता की ओर मुड़ जाती है। शैव मत के सर्वश्रेष्ठ देवता भगवान शिव जहॉ आतुर है तो वहीं बालरूप भगवान श्रीराम भगवान शिव के दर्शन को व्याकुल हो उठते है। दोनों एक दूसरे का दर्शन चाहते है। अयोध्या में श्रीराम ही नहीं भगवान शिव की भी उतनी ही प्रतिष्ठा है।

कथावाचक ने कहा कि भगवान श्रद्धा और अटल विश्वास से मिलते है। परमात्मा के मार्ग का पथिक होने के लिए अटल विश्वास रूपी नौका चाहिए। तप से भी भगवान प्राप्त होते है। तप में असीम शक्ति है। तप से पेट भी भरता है और भगवान भी मिलते है। तप से ही एहलोक एवं परलोक जीता जा सकता है। भगवत् भजन अर्थात् भगवत नाम भी भगवान को प्राप्त करने का एक साधन है। भगवत नाम में इतनी शक्ति है कि उल्टा नाम अर्थात् मरा–मरा जपने से भी रत्नाकर ब्रह्मत्व को प्राप्तकर वाल्मीकि हो गया। भगवान का दर्शन पॉच रूपों में किया जा सकता है पररूप, व्यूहरूप, विभवरूप, अर्न्तयामी रूप और अर्चारूप। पररूप में भगवान कण–कण में व्याप्त होते है। उनका दर्शन करने के लिए साधन और तप से प्राप्त दिव्य दृष्टि चाहिए। व्यूहरूप में भगवान श्रीराम–लक्ष्मण–भरत–शत्रुध्न तथा कृष्ण–संकर्षण–प्रद्युम्म और अनिरूद्ध के दर्शन हुए। कथाव्यास ने कहा कि श्रीराम का जीवन साक्षात् भारतीय संस्कृति का प्रतीक है। भगवान् श्रीराम का जीवन पढ़ लें तो वेद पढ़ने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। श्रीराम आनन्दकन्द हैं। वे वेद–पुराण को जीवन में उतारकर उनके व्यावहारिक ज्ञान के प्रतिमान हैं। श्रीराम ने ज्ञान–विद्या को जीवन में उतारा। ज्ञान तभी फलदायी है जब वह जीवन में उतरे। वही ज्ञान श्रेष्ठ होता है जो समाज–राष्ट्र के उत्थान में लगे। कथाव्यास ने कहा कि जिस भगवान की गोद में ब्रह्माण्ड खेलता है, वह भगवान बालरूप में माता कौशल्या की गोद में खेलते हैं। जिनकी गोंद में दुनियॉ हॅसती–रोती है वे माता कौशल्या की गोद में कभी रोते हैं तो कभी हंसते है। भगवान की बाललीला अद्भुत थी। इसी बीच भगवान ने चतुर्भुज रूप में

माता कौशल्या को दर्शन दिया। चतुर्भुज भगवान ने चार धर्म–सामान्य धर्म, विशेष धर्म विशेषतर, विशेषतम् धर्म का प्रतिपादन किया।

अयोध्या में महाराजा दशरथ के राज्य में एक माह तक जन्मोत्सव चलता रहा। भगवान शिव भी साधुवेष में भगवान की बाल–लीला का आनन्द लेने अयोध्या में निवास किये। अयोध्या, भगवान विष्णु और शिव के कारण ही भारत के तीर्थो में प्रतिष्ठित हो गयी। भगवान् की बाल–लीला का वर्णन करते–करते कथावाचक श्रद्धालुजन की नब्ज पकड़ते हुए कथा के निहितार्थ की ओर बढ़ते हुये कह पड़ते है कि आज भारत का बचपन नष्ट हो रहा है। बचपन नष्ट करने वाले कोई और नहीं, बच्चों के माता–पिता ही हैं। यदि बचा सके तो आज बचपन बचाएँ। बच्चे अपने परिवार की पाठशाला में ही सर्वप्रथम सीखतें हैं। हमारा पारिवारिक जीवन जैसा होगा, भावी पीढ़ी भी वैसी ही होगी। परिवार में जैसे संस्कार होगें, वैसा ही संस्कार बालक सीखता है। कथाव्यास कहते है यदि वृक्ष को हरा भरा देखना है तो उसके मूल में पानी डालों, पत्ते सींचने से क्या होगा। अतः यदि भारत में संस्कारवान पीढ़ी खड़ा करनी हो तो बचपन को संस्कारवान बनाया जाय।

महाराजा दशरथ के चारों पुत्रों का नामकरण संस्कार सम्पूर्ण हुआ। महर्षि वशिष्टि द्वारा चारों पुत्रों का नामकरण और उनकी महिमा का उल्लेख कथा का केन्द्र बिन्दु बना और इसी के साथ कथा व्यास ने कथा को विस्तार देते हुए कथा को विश्वामित्र द्वारा भगवान राम के मांगे जाने की ओर बढ़ा दिया। अयोध्या नरेश दशरथ के दरबार में विश्वामित्र राक्षसों के बध के लिए राम को मांगते है। महाराजा दशरथ विश्वामित्र के आने का कारण पूछते हुए कहते है– केहि कारण आगमन तुम्हारा। विश्वामित्र ने महाराजा दशरथ से कहा अनुज समेत देहु रघुनाथा, निशिचर बधै मैं हो हुं सनाथा। महाराजा दशरथ ने तो यह माना था कि विश्वामित्र धन सम्पदा मांगने आये हैं। उन्हें कहां पता था की एक ऋषि राष्ट्र की रक्षा के लिए उनके प्राणों के प्रिय राजकुमारों को मांगने आये हैं। वास्तव में संत धरती पर धर्म की रक्षा के लिए आते हैं, राष्ट्र की रक्षा के लिए आते हैं। संत परमात्मा की करूणा के अवतार हैं। संत चलते–फिरते साक्षात तीर्थ हैं। एक संत राजकुमारों को मांगता है और दूसरा संत राष्ट्र रक्षा हेतु राजा को अपने राजकुमारों को सुपुर्द करने की सलाह देता है। वशिष्ट के समझाने पर वे राम–लक्ष्मण को विश्वामित्र के साथ भेजते है। इस बहाने विश्वामित्र द्वारा अपनी तपस्या में प्राप्त सभी दिव्यास्त्रों को रामलक्ष्मण को सुपुर्द करते है। ताड़का का बध, मारिच से यज्ञ की रक्षा और अहिल्या का उद्धार पर कथा केन्द्रित होती है।

कथा व्यास ने कहा कि कलयुग में भगवत्भजन से भी मनुष्य तर जायेगा। भगवान 'नाम' की अद्भुत महिमा है। नाम जपते–जपते मृत्युलोक छोड़ने वाले पापी भी पुण्यलोक को जाते है। कथाव्यास कथा के बहाने उपदेश देते हुऐ कहते हैं कि क्रोध पाप का मूल है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम क्रोध की प्रतीक ताड़का एवं सुबाहु का बध करते हैं। विश्वामित्र के साथ मिथिला की ओर चल पड़ते हैं। आज कथा इसी पर विश्राम लेती है।

व्यासपीठ का पूजन अनुष्ठान के यजमानगण सपरिवार सहित सपरिवार सहित श्री ईश्वर मिश्र, महापौर श्री सीताराम जायसवाल, श्री जवाहरलाल कसौधन, श्री पुष्पदन्त जैन, श्री ओम प्रकाश जालान, श्री चन्द्र प्रकाश अग्रवाल, श्री गंगा राय, श्री अरूण कुमार अग्रवाल, श्री अतुल सर्राफ, श्री विकास जालान, श्री संतोष कुमार अग्रवाल, श्री जीतेन्द्र बहादुर चन्द, , श्री महेश पोद्दार, श्री अवधेश सिंह, श्री चन्द्र बंसल, श्री मारकण्डेय यादव, श्री गोरख सिंह, श्री ओम प्रकाश

कर्मचन्दानी, श्री संजय गुप्ता, श्री कृष्ण मोहन, श्रीमती उर्मिला सिंह, श्री प्रदीप जोशी, श्री अजय सिंह, श्री विनोद कुमार राना इत्यादि ने किया।

कथा के नौ मंत्र

1. इन्द्रियों को वश में रखें, सुख शान्ति आपके चरणों में होगी।
2. संयम साधना से जीवन में आनन्द के फूल खिलते हैं।
3. मुक्ति के लिए सद्गुरू चाहिए।
4. भगवान् भोग नहीं भाव के भूखें हैं।
5. भगवान् दक्षता से नहीं भक्ति से मिलते हैं।
6. धर्म भावुकता के आधार पर नहीं नैतिकता और चरित्र के आधार पर टीका होता है।
7. गृहस्थ जीवन में प्रवेश करते हुए जो धर्म को पकड़े रहता है वह कभी सत मार्ग से नहीं भटकता।
8. प्राणी को मृत्यु और भगवान् इन दो को सदैव याद रखना चाहिए।
9. जीवन में जब भी दुविधा आये और जीवन निरस्त होने लगे तो भगवान् में मन लगायें जीवन सरस हो जायेगा।

युगपुरुष ब्रह्मलीन म
राष्ट्रसंत ब्रह्मल
श्रद्धांज
श्रीराम-क
दिनांक - 22 से 28 सितम्बर

युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दि
राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन मह
श्रद्धांजलि